

अपने विवेक को स्वस्थ कैसे रखें

किसी ने कहा है कि यदि हम में से किसी का विवेक बाहर निकल जाए, तो यह एक छोटा सा ऑपरेशन होगा। हम अपने विवेक को जीवित, स्वस्थ और परमेश्वर प्रदत्त उद्देश्यों को पूरा करने वाला कैसे बना सकते हैं? हम अपने विवेक को क्रियाशील कैसे रख सकते हैं? इस पाठ में, हम विवेक को स्वस्थ रखने के कई ढंगों पर ध्यान देंगे। मेरे सुझाव विचार की दो रेखाओं के अनुसार होंगे: (1) हमें वही करना चाहिए जो हम कर सकते हैं। (2) फिर हमें प्रभु पर भरोसा रखना सीखना चाहिए।

अपने विवेक को व्यक्तितगत व्यायाम से स्वस्थ रखें

आइए उसी से आरम्भ करते हैं जो हम कर सकते हैं। प्रेरितों 24:16 में पौलुस ने कहा, “मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर से मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।” यूनानी शब्द के अनुवाद “मैं ... यत्न करता हूँ” को यूनानी लोग प्रतियोगिता हेतु तैयार करने के लिए खिलाड़ियों के कठिन परिश्रम के लिए प्रयुक्त करते थे। मूलतः, पौलुस ने कहा, “मैं दोष रहित विवेक पाने के लिए स्वयं अभ्यास करता हूँ।” पौलुस के शब्दों के महत्व को समझने के लिए, एक गम्भीर खिलाड़ी के कठोर कार्यक्रम, कई घण्टों की मेहनत और थका देने वाले अभ्यास पर विचार कीजिए। पौलुस ने कहा कि “अपने विवेक को सदा निर्दोष रखने के लिए” उसने ऐसे ही प्रयास किया।

शरीर को व्यायाम की आवश्यकता है। शुरू-शुरू के एक स्पेस मिशन में, एक रूसी अन्तरिक्ष यात्री बिना व्यायाम के स्पेस में छह माह रहा। जब वह पृथ्वी पर वापस आया, तो उसे फिर से चलना सीखाना पड़ा। विवेक को भी व्यायाम की आवश्यकता है। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा:

क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं (इब्रानियों 5:13, 14)।

“पक्के” शब्द यूनानी भाषा के *gumnazo* शब्द का अनुवाद है, जिससे हमें “जिम्नास्टिक,” “जिम्नेजियम” आदि शब्द मिले हैं। इसलिए KJV में अभ्यास का अनुवाद *exercised* हुआ है।

शारीरिक अभ्यास शारीरिक व्याधियों (रोगों) को रोकने और शारीरिक समस्याओं को दूर करने में सहायता कर सकता है। इसी प्रकार, विवेक का अभ्यास आत्मिक पीड़ाओं को रोकने और आत्मिक समस्याओं के समाधान के लिए है। व्यायाम से “निर्बल” विवेक (1 कुरिन्थियों 8:7) को “बलवान” विवेक (रोमियों 15:1) बनाया जा सकता है।

विवेक के अभ्यास के लिए सामान्य ढंग

हम अपने विवेक को अभ्यास अथवा व्यायाम कैसे करवा सकते हैं? यह समझ कि विवेक क्या है और क्या करता है, विवेक के “अभ्यास” के सामान्य ढंगों का सुझाव देती है। याद रखें कि विवेक वह स्वाभाविक चेतना है जिससे हमें सही और गलत कार्यों की जानकारी मिलती है, और यदि हम इसकी सुनते नहीं तो यह उदास भी हो सकती है।¹ आगे बढ़ते हुए आइए इस बात को अपने मन में रखें।

(1) परमेश्वर की इच्छा को जानने के बारे में हमें गम्भीर होने की आवश्यकता है। भजन संहिता 119:9 पर आधारित अंग्रेज़ी में है, जिसमें लिखा है “जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।”

यदि हम अपने विवेक को बलवान बनाना चाहते हैं, तो हमारे लिए पवित्र शास्त्र को पढ़ना, उसका अध्ययन करना और याद करना आवश्यक है। दस हजार लोगों से पूछा गया कि वे पवित्र शास्त्र की बहुत सी आयतों के बारे में आप कितना जानते हैं। “जानते” का अर्थ “यह था कि वे बाइबल में से ढूँढ़कर पूरी आयत को उद्धृत करने के साथ उसकी पुस्तक, अध्याय और आयत को बता सकते हैं।” बलवान मसीही होने का दावा करने वाले दस हजार लोग थे, परन्तु औसतन वे केवल दो-ढाई आयतें ही अच्छी तरह जानते थे!

अपने व्यक्तिगत अध्ययन के अलावा, हमें प्रत्येक अध्ययन, आराधना और संगति के अवसर का लाभ उठाना चाहिए। इससे हमें एक दूसरे के साथ मिलने, बात करने और “बलवान” विवेक वालों के साथ अध्ययन करने में सहायता भी मिलेगी।

(2) हमें पाप के बारे में, यह जानने के लिए कि क्या सही है और क्या गलत, गम्भीर होने की आवश्यकता है। हमें जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने की आवश्यकता है (रोमियों 14:12)। हमें पाप की गम्भीरता को महसूस करने की आवश्यकता है (रोमियों 6:23)। यह संसार पाप, दोष और जिम्मेदारी को बहुत हद तक भूल चुका है; हमें अपने आप को इस संसार के मापदण्ड से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।

(3) अपने विवेक की बात पर ध्यान देने के लिए हमें गम्भीर होने की आवश्यकता है। पौलुस लगातार अपने विवेक की सलाह लेता रहा (प्रेरितों 23:1)। इसलिए, वह लिख पाया:

मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी ... गवाही देता है (रोमियों 9:1)।

क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था (2 कुरिन्थियों 1:12)।

पौलुस की तरह, हमें भी वही करने की कोशिश करते रहना चाहिए जो हम जानते हैं कि हमें करना चाहिए। इस सम्बन्ध में, यूहन्ना 7:17 दिलचस्प है: “यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।” प्रायः हम सोचते हैं कि पहले सीखा जाए और उसके बाद किया जाए, परन्तु इस आयत में, यीशु ने क्रम को उल्टा दिया। यदि हम अपने आपको वह करने के लिए समर्पित कर दें जो सही है, तो इससे हमें यह जानने में सहायता मिलेगी कि क्या सही है।

(4) गलती करने पर मामले को सुधारने के बारे में हमें गम्भीर होने की आवश्यकता है / जब विवेक हमें बताता है कि हमने कुछ गलत किया है तो हमें सच्चे मन से पश्चात्ताप कर, परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि उस स्थिति को सुधारने के लिए जो कुछ भी आवश्यक हो किया जा सके। 2 कुरिन्थियों 7:10 में पौलुस ने “परमेश्वर भक्ति के शोक” की जो “ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार होता है” तुलना “संसारी शोक” से की जो “मृत्यु उत्पन्न करता है” “परमेश्वर भक्ति का शोक” होने का अर्थ पापों के कारण परमेश्वर का मन दुखी करने का खेद है। “संसारी शोक” का अर्थ पाप के परिणामों के कारण अपने आपको दुखी करना होता है। ऊपरी पश्चात्ताप और पाप के ऊपरी अंगीकार से अधिक तेजी से विवेक का विनाश कोई और नहीं कर सकता।

विवेक के अभ्यास करने के विशिष्ट तरीके

दूसरा, विवेक पर जिन पदों का हमने अध्ययन किया है वे उन विशिष्ट तरीकों का सुझाव देते हैं जिनकी हमें अपने विवेकों के अभ्यास के लिए आवश्यकता है।^१

(1) हमें सेवा के क्षेत्र में अपने विवेक का अभ्यास करना चाहिए। दास होने के बारे में पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा: “आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो” (1 तीमुथियुस 1:5)। पौलुस की बातों के क्रम में प्रगति दिखाई देती है: जिसका मन शुद्ध है, उसका विवेक अच्छा हो सकता है; और जिसका विवेक अच्छा है, वह एक गम्भीर विश्वासी हो सकता है।

अच्छे विवेक के बिना परमेश्वर और मनुष्य की सेवा वैसे नहीं की जा सकती जैसे होनी चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखकर उस चुनौती की बात की जो उसने उसे दी थी, कि “उन भविष्यवाणियों के अनुसार ... तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता

रहे। और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे” (1 तीमुथियुस 1:18, 19क)। पौलुस ने आगे कहा कि कई लोग विश्वास और अच्छे विवेक को टुकरा गए थे, और इस कारण उनका “विश्वास रूपी जहाज डूब गया” (1 तीमुथियुस 1:19ख)।

चाहे अच्छे (शुद्ध, विवेक) वाले का मन सेवक वाला हो सकता है परन्तु उसकी सेवा की सराहना नहीं, विरोध होता है। पौलुस के साथी यहूदी तो उससे घृणा करते थे और उसकी हत्या की कोशिश में लगे रहते थे, फिर भी वह यह वाक्य लिख सका था:

मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है /कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता (रोमियों 9:1-3)।

शुद्ध विवेक होने के कारण, पौलुस यह पुष्टि करने के लिए कि उसके शत्रुओं ने उसके बारे में गलत बताया था, दूसरों के विवेकों के बारे में कह सका:

... हमने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं ... सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं, और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा (2 कुरिन्थियों 4:2; 5:11)।

(2) हमें सताव के क्षेत्र में अपने विवेकों का अभ्यास करना चाहिए। अपनी पत्रियों में, पौलुस ने बहुत कुछ बताया कि सताव के प्रति मसीहियों की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए। अपनी चर्चा में उसने शुद्ध विवेक की आवश्यकता को शामिल किया:

क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है (1 पतरस 2:19)।

पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ। और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उनके विषय में वे जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चालचलन का अपमान करते हैं लज्जित हों (1 पतरस 3:15, 16)।

यदि हम जानते हैं कि हम सही हैं तो सताव सहकर भी हम आगे बढ़ते जाएंगे। एक

मसीही को दोषी विवेक से जल्दी कोई भी चुप नहीं करवा सकता, और शुद्ध विवेक से बढ़कर कोई भी एक मसीही को बोलने के लिए उत्साहित नहीं कर सकता!

(3) व्यक्तिगत न्याय के लिए हमें अपने विवेकों का अभ्यास करने की आवश्यकता है। विवेक से सम्बन्धित बाइबल का सबसे लम्बा भाग 1 कुरिन्थियों 8 से 10 है। इससे मिलता-जुलता एक भाग रोमियों 14 (के साथ रोमियों 15 की कुछ आयतों) में मिलता है। ये पद हमें सिखाते हैं कि जब न्याय के मामलों में हम दूसरे मसीहियों के साथ असहमत होते हैं तो हमें उनके साथ क्या सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। विचाराधीन मुख्य विषय मूर्तियों पर चढ़ाए गए मांस को खाने के बारे में है।⁴ इन अध्यायों में विवेक के अभ्यास के बारे में बहुत से महत्वपूर्ण सबक दिए गए हैं। कुछ इस प्रकार हैं:

न्याय के मामलों में भी, व्यक्तिगत मान्यताएं होनी आवश्यक हैं। इस तथ्य से कि यह न्याय का मामला है, यह अर्थ नहीं निकलता कि वह विषय ही महत्वहीन है। “हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले” (रोमियों 14:5ग; आयत 22 भी देखिए)।

अपने व्यक्तिगत निर्णयों के बारे में, अपने विवेक की बात न टालें (रोमियों 14:22, 23), परन्तु उदार सोच वाले बने रहें। हम सदैव कुछ न कुछ सीखते ही रहते हैं। “यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता” (1 कुरिन्थियों 8:2)।

व्यक्तिगत न्याय की बातों के विषय में बहस में न उलझें, परन्तु प्रेम के आत्मा में ऐसे मामलों पर चर्चा करें। “इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो” (रोमियों 14:19)।

कोई अपने आपको “बलवान” विवेक वाला समझे या “निर्बल” विवेक वाला,⁵ उसे अपने भाइयों और बहनों की भावनाओं के प्रति भी विचारशील होना चाहिए (रोमियों 14:1, 3; 15:1-3)।

कोई अपनी भलाई को न ढूँढ़े, वरन औरों की। जो कसाइयों के यहां बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो। क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है। और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए, वही खाओ: और विवेक के कारण कुछ न पूछो। परन्तु यदि कोई तुम से कहे, यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है, तो उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक के कारण न खाओ। मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। ... तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए टोकर के कारण बनो। जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ, कि वे उद्धार पाएं (1 कुरिन्थियों 10:24-29क, 32, 33)।

अपने निर्णयों के विषय में अपने साथ क्रूरतापूर्वक ईमानदार होने की कोशिश करें; किसी भी पूर्वधारणा या निर्बलता से जो आप में है, चौकस रहने की कोशिश करें (1 कुरिन्थियों

8:1, 2)। “इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े” (1 कुरिन्थियों 10:12)।

आश्चर्य है कि आपका विवेक आपको कुछ ऐसा करने की अनुमति न दे जिससे आपके भाई को ठोकर लगे या वह पाप में गिर जाए (रोमियों 14:13, 15, 21)।

परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिए ठोकर का कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में मूरत के साम्हने बलि की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के लिए मसीह मरा नाश हो जाएगा। सो भाइयों का अपराध करने से और उन के निर्बल विवेक को चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते हो। इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा, ऐसा न हो कि मैं अपने भाई के ठोकर का कारण बनूँ (1 कुरिन्थियों 8:9-13)।

दूसरी ओर, अपने विवेक को “सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए” (1 कुरिन्थियों 10:31ख; रोमियों 14:6 भी देखिए) करने को उत्साहित करना चाहिए।

(4) हमें अपने विवेक को अधिकार के क्षेत्र में अभ्यास कराने की आवश्यकता है। सरकारी अधिकार के विषय में, पौलुस ने कहा, “इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है” (रोमियों 13:5)। नियम के अनुसार, विवेक हमें बताता है कि “प्रधान अधिकारियों” की आज्ञा माननी चाहिए (रोमियों 13:1-7; तीतुस 3:1, 2; 1 पतरस 2:13-17; मत्ती 22:15-22 भी देखिए)।⁶ परन्तु, जब सरकारी अधिकारी हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाने का आदेश दें तो हमारे विवेकों को हमें उसकी आज्ञा को आदरपूर्वक तोड़ने की बात बतानी चाहिए (प्रेरितों 4:19, 20)।⁷ पतरस ने कहा, “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है” (प्रेरितों 5:29)। “कर्तव्यकर्म” शब्द संकेत देता है कि उसका विवेक बात कर रहा था (इस मामले में, विवेक को पवित्र आत्मा के द्वारा जगाया गया)।

और क्षेत्रों की भी बात हो सकती थी, परन्तु यह जोर देने के लिए कि जो कुछ किसी व्यक्ति को अपने विवेक को स्वस्थ और कार्यरत रखने के लिए करने की आवश्यकता है वह इनमें स्पष्ट है परन्तु, जब कोई अपने विवेक की बात टालता है और उसे पता होता है कि इसकी सहायता करने के लिए वह व्यक्तिगत तौर पर कुछ नहीं कर सकता तो? फिर उसे प्रभु की ओर लौटने की आवश्यकता है।

प्रभु की सहायता को स्वीकार करके अपने विवेक को स्वस्थ रखें

हमारे आत्मिक “नाड़ी तन्त्र” के कार्य करते रहने में दोष का उतना ही महत्व है,⁸ जितना हमारे शारीरिक तन्त्र में कष्ट का। कष्ट संकेत देता है कि कुछ गलत है और उसे ठीक करने की आवश्यकता है। आत्मिक रूप से दोष वही कार्य करता है। आज, दोष की धारणा का शिक्षकों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और यहां तक कि कुछ प्रचारकों द्वारा उपहास किया जाता है और इसे तुच्छ समझा जाता है। परन्तु, दोष परमेश्वर की योजना का एक महत्वपूर्ण भाग है। हमें कष्ट से छुटकारा पाना अच्छा लग सकता है, परन्तु ऐसा करना हमें बहुत से शारीरिक खतरों में डाल देगा। इसी प्रकार, दोष से छुटकारा पाना हमें अच्छा लग सकता है, परन्तु ऐसा करने से हम अधिक असुरक्षित रूप से लोभ में फंस जाएंगे।

परन्तु हमें समझना चाहिए कि दोष अपने आप में एक फल के रूप में नहीं है। परमेश्वर की योजना में, दोष को कुछ निश्चित ढंगों से प्रतिक्रिया करने के लिए बनाया गया: (1) उस से मुड़ने के लिए जो हमें दोषी महसूस करवाता है⁹ और (2) पापों की क्षमा और नये सिरे से आरम्भ करने के लिए परमेश्वर की ओर लौटने के लिए (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; आदि)।

दोष द्वारा एक बार अपना उद्देश्य पूरा कर लेने के बाद, हमें सीखना चाहिए कि परमेश्वर के अनुग्रही प्रबन्ध को स्वीकार करके उस दोष को कैसे बाहर रखा जाए। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई असीमित समय के लिए दोषपूर्ण विवेक के साथ रहे, जिसे इब्रानी लोग “दोषपूर्ण विवेक” कहते हैं (इब्रानियों 10:22)। “दोषपूर्ण विवेक” उसे कहते हैं जो पाप करने के दोष से पीड़ित हो, जो जानता हो कि उसने गलत किया है और उसे क्षमा नहीं मिली (इब्रानियों 9:9; 10:2)। परमेश्वर चाहता है कि उस ज्ञान से कि हमें यीशु के लहू के द्वारा क्षमा किया गया है, हमारे विवेक शुद्ध हो जाने चाहिए। इब्रानियों की पत्नी के लेखक ने पूछा, “तो मसीह का लोहू ... तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो” (इब्रानियों 9:14)। इस लेखक ने यह भी ध्यान दिलाया कि यदि आराधक शुद्ध हो जाते, तो “उनका विवेक उन्हें पापी [अन्य शब्दों में, उनके पापों के बारे में दोषी] न ठहराता” (इब्रानियों 10:2)। इब्रानियों 9:14 और 10:2 में यूनानी शब्द *katharizo* का अनुवाद “शुद्ध” किया गया है, जिससे हमें अंग्रेज़ी के शब्द “catharsis” और “catherize” मिले हैं। इनका अर्थ पूरा और व्यापक शुद्धता है।

इब्रानियों 10:22 के शब्द हमें “सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप” जाने की चुनौती देते हैं। जैसे वेदी को शुद्ध करने के लिए इस पर जानवरों का लहू छिड़का जाता था, उसी प्रकार हमारी आत्माओं को यीशु के लहू का “छिड़काव करके” शुद्ध किया जाता है। फिर, जैसे याजक वेदी में प्रवेश करने से पहले

अपने शरीरों को धोते थे, वैसे ही हमारे शरीरों को यीशु में बपतिस्मा लेने के समय “जल से धोया जाता” है (गलतियों 3:26, 27) भी देखिए। विश्वास और आज्ञाकारिता से एक बार परमेश्वर के उद्धार का मार्ग स्वीकार कर लेने के बाद, यीशु के लहू के कारण हमारे विवेक फिर से शुद्ध किए जाते हैं!

पापों से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली क्षमा हमारे विवेकों को स्वस्थ रखने के लिए अपर्याप्त है; हमें परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करना सीखना चाहिए। एक डॉक्टर ने, बारनट्ट नामक एक सुसमाचार प्रचारक को बताया, कि उसके बहुत से मरीजों को चिकित्सकीय देखभाल की आवश्यकता नहीं थी। “उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो उन्हें शुद्ध विवेक का मार्ग दिखाने में सहायता कर सके,” उसने कहा। “उन्हें नींद की गोलियों की आवश्यकता नहीं है; उन्हें पुराने पड़ चुके उस अच्छे पश्चात्ताप की आवश्यकता है।” उसने ज़ोर दिया कि उन्हें आधुनिक दवाई की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि उनका सांस चलते रहने का अहसास कराने के लिए उन्हें क्षमा चाहिए थी।

हमें अपने पूरे मन से विश्वास करना पड़ेगा कि परमेश्वर क्षमा करता है और हम उसके वचन पर भरोसा कर सकते हैं: “मैं उनके पापों को, और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा” (इब्रानियों 10:17)।

हमें अपने आपको भी क्षमा करना सीखना चाहिए। कई बार, परमेश्वर हमें क्षमा कर देता है परन्तु हम अपने आपको क्षमा नहीं कर पाते हैं। आप में से कई लोग समझ गए होंगे कि मेरे कहने का क्या अभिप्राय है। आपने जो पाप किया है वह भयानक है, और आप यह भी जानते हैं कि आपका विवेक बड़ी निर्दयता से आपको बँत मारता है। स्थिति को सुधारने के लिए जो कुछ आप कर सकते हैं, करते हैं परन्तु नुक्सान तो हो चुका है। इस कारण आप अपने मन में पश्चात्ताप लेकर परमेश्वर के पास जाएं और अपनी दुख भरी कहानी उसके आगे खोल दें। आप परमेश्वर से क्षमा मांगें, और आपके पास यह अपेक्षा करने का हर कारण है कि वह आपको क्षमा कर देगा। “क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है” (इब्रानियों 10:23ख)। अभी भी, आपके अन्दर कुछ है जो आपसे कहलवा रहा है, “यह इतना आसान नहीं हो सकता। जो भयंकर काम मैंने किया है उससे विमुक्त होने के लिए मुझे और कष्ट उठाना होगा!” कई बार, लोग अपने पाप का पश्चात्ताप करने के वर्षों बाद भी उस दोष से पीड़ित होते हैं, उस नुक्सान को भरने के लिए उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की और परमेश्वर से क्षमा भी मांगी। मैं फिर से कहता हूँ कि हमें अपने पूरे मन से यह विश्वास करना होगा कि परमेश्वर क्षमा करता है और हमें अपने आपको क्षमा करना सिखाना होगा।

यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3 में अपने आपको क्षमा करने की योग्यता की बात की है। “काम और सत्य के द्वारा” प्रेम की बात करने के बाद, उसने कहा, “इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसके विषय में हम उसके साम्हने अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है” (आयतें 18-20)। “अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे” और “जिस बात में हमारा

मन हमें दोष देगा” वाक्यांशों पर ध्यान दें। स्पष्टतः, उसके कुछ पाठकों के विवेक में दोष होगा और उन्हें आश्वासन चाहिए था। फिर इस पद के अन्तिम भाग पर ध्यान दें: “क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है, और सब कुछ जानता है।” जब हमारे मन हमें दोषी ठहराते हैं (अर्थात्, जब हमारे विवेक दोषपूर्ण होते हैं) तब भी, परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है। वह जानता है कि हमने सच्चे मन से पश्चात्ताप किया है कि नहीं। यदि हमने किया है, तो उसने हमें क्षमा कर दिया है, चाहे हमने अपने आपको क्षमा किया हो या नहीं।

परन्तु, परमेश्वर ने हमारे लिए यह नहीं चाहा कि हम दोष में रहें। इस कारण यूहन्ना ने अपनी चर्चा जारी रखी: “हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव होता है” (आयत 21)। अन्य शब्दों में, यदि हम परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करने के इच्छुक तथा योग्य हैं तो हम आश्वासन और भरोसे से जीवन बिता सकते हैं।

अपने आपको क्षमा न कर पाने से अपने साथ ही सम्बन्ध प्रभावित होते हैं तथा दूसरों के साथ भी सम्बन्ध प्रभावित होते हैं। यदि कोई खुद को ही क्षमा नहीं कर सकता, तो उसे दूसरों को क्षमा करना कठिन लगेगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात, इससे परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध प्रभावित होंगे। जो कोई दोष से पीड़ित है वह उस हियाव और दिलेरी के साथ परमेश्वर के साम्हने नहीं आ पाएगा जिससे उसे आना चाहिए (इब्रानियों 4:15, 16)।

सारांश

यदि हम (1) अपने विवेकों का अभ्यास करें और (2) क्षमा के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के पूर्वप्रबन्ध पर निर्भर होना सीखें तो पौलुस की तरह, हम “अपने विवेक को सदा निर्दोष” रख सकते हैं और “शुद्ध विवेक” के साथ रह सकते हैं (प्रेरितों 24:16; 1 तीमुथियुस 3:9)।

आशा है, कि पाठों की इस शृंखला के अन्त में, कम से कम एक व्यक्ति के विवेक ने उसे बपतिस्मा लेने या परमेश्वर के भटके हुए एक बालक के रूप में वापस आने के लिए हिलाया होगा। महान मिशनरी जे.एम. मैकलेब ने कहा कि लोगों को सुधारने का एक मात्र ढंग उनके विवेक को जगाना है। उसने ध्यान दिया कि हम लोगों से प्रतिज्ञा करवा सकते हैं, पुष्टि करवा सकते हैं, और यहां तक कि प्लेजों (वायदों) पर हस्ताक्षर करवा सकते हैं परन्तु जब तक उनके विवेक को स्पर्श नहीं करते, हम उन्हें केवल झूठे ही बनाते हैं।

क्या आपका विवेक उत्तेजित हुआ है? यदि हुआ है, तो आप इसे शांत करने की, नज़रअन्दाज करने की, उपेक्षा करने या इसका दुरुपयोग करने की कोशिश कर सकते हैं; परन्तु इसे संतुष्ट करने के लिए आप केवल वही कर सकते हैं जो यह कहता है। अपने आपसे झगड़ा मत कीजिए। आज ही प्रभु की आज्ञा को मानिए!

पाद टिप्पणियां

¹एलफ्रेड मार्शल, *द इन्टरलिनियर ग्रीक इंग्लिश न्यू टेस्टामेन्ट*, 2nd ed.। ²इस प्वाइंट की आवश्यकता के अनुसार अपने सुनने वालों के साथ पिछले दो पाठों की समीक्षा कीजिए। ³पाठ के इस भाग को लगभग असीमित रूप से बढ़ाया जा सकता है। उन क्षेत्रों पर जोर दें और उन्हें (विस्तार दें) जिनकी आपके सुनने वालों को सबसे अधिक आवश्यकता है। ⁴इन पदों की शिक्षाओं पर पूरी तरह से चर्चा करने का समय नहीं है, परन्तु कुछ अतिरिक्त विचार दिए जाएंगे। ध्यान रखें कि पवित्र शास्त्र के ये भाग केवल न्याय के मामलों से सम्बन्धित हैं कि कौन सी बात अपने आप में सही या गलत नहीं है। ⁵मुझे कभी कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिससे लगा हो कि उस विषय पर उसका विवेक “निर्बल” था, परन्तु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: किसी का विवेक “बलवान” हो या “निर्बल,” वह अपने आप से वैसे ही व्यवहार करेगा। ⁶मेरा एक मित्र गति सीमा को “शास्त्र के अनुसार गति” कहता है। ⁷बाइबल के उदाहरणों में इब्रानी दाइयां, तीन इब्रानी युवक और दानियेल शामिल हैं। ⁸अपनी शृंखला में, हमने सुझाव दिया है कि आत्मिक व्यक्ति के लिए विवेक का वही काम है जो एक भौतिक मनुष्य के लिए नाड़ी तन्त्र का है। ⁹पीड़ा के लिए शरीर की प्रतिक्रिया के साथ समानता बनाई जा सकती है: पीड़ा महसूस करने पर, दिमाग जल्दी से कहता है, “वह गर्म कड़ाही उतार दो!” या “आग से दूर हो जाओ!” या “अपने पांव से कांटा निकाल दो!”